क्या समुद्रों में सबसे ज्यादा संख्या मछलियों की है

तरह-तरह के जितने किस्म के जीव-जंतु जमीन पर पाये जाते हैं, उससे कहीं ज्यादा समुद्र में रहते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि धरती का ज्यादातर हिस्सा समुद्रों से घिरा है। समुद्र में सबसे ज्यादा संख्या मछलियों की है। मछलियों में भी ज्यादातर ऐसी हैं जो अजीबोगरीब है। कुछ नमूने इस प्रकार है।

ओशन सनफिश- इसे 'मोला' भी कहा जाता है। यह एक अजीब मछली है, जिसकी पूंछ उसके सिर जैसी होती है। इसलिए इसका सिर कौन सा है और पूंछ कौन सी है यह पहचानना मुश्किल हो जताा है। जर्मनी में इसे तैरता सिर कहकर पुकारा जाता है। इस मछली को पूंछ से तैरने में कोई मदद नही मिलती। यह बड़े आकार की मोटी खाल वाली मछली है। हड्डी बहुल मछलियों में यह सबसे ज्यादा वजनी होती है। इसकी लंबाई 3.3 मीटर तक, वजन 2241 किलोग्राम तक और त्वचा की मोटाई 15 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण ज्यादातर शत्रु इसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते।

कूसियन कार्प- एक छोटी यूरोपीय मछली है। पाइक जैसी मछलियां आसानी से इसका शिकार कर लेती है। लेकिन इसने अपने बचाव का तरीका निकाल लिया है। कूसियन कार्प के झुंड के बीच जब कोई पाइक मछली आ जाती है तो एक रासायनिक संकेत से इन्हें उसका पता चल जाता है। वे अपनी पीठ पर मजबूत मांसपेशी का कूबड़ पैदा कर लेती हैं। कूबड़ के कारण उनका आकार इतना बड़ा हो जाता है कि पाइक मछली उन्हें निगल नहीं सकती।

फॉग फिश - इसे मेंढक मछली भी कहा जाता है। उसकी नीली आंखों पर आपकी नजर न पड़े तो आप उसे शैवाल से ढंका हुआ पत्थर का टुकड़ा समझेंगे। उसके सारे शरीर पर त्वचा की हल्की पट्टियां लहराती रहती है। यह चालाक मछली अपने मस्तक पर की पट्टियों को मिलाकर गांठ-सी बना लेती है। जब कोई छोटी मछली उस गांठ का निरीक्षण करने पास आ पहुंचती है तब यह अपना विशाल मुंह खोलकर उसे निगल लेती है।

टाइगर शार्क- यह मछली विश्व भर के गर्म जल स्थलों में पाई जाती है। यह खाने की हर चीज चट कर जाती है। जेलीफिश, समुद्री पक्षी, जहरीले समुद्र सांप से लेकर कठोर कवच वाले कछुए तक यह मछली आसानी से खा जाती है। इसके दांत बहुत मजबूत होते हैं, जिनकी मदद से यह कछुए की हड्डियों और कवच को आसानी से चबा जाती है। समुद्र में डूबकर मरे मुर्गी, घोड़े और गाय जैसे जानवरों के शव भी यह खा जाती है। अगर टाइगर शार्क का कोई दांत टूट जाता है तो उसका स्थान पिछली पंक्ति में उगने वाला दांत ले लेता है। सभी शार्कों की तरह टाइगर शार्क के भी पूरे जीवन में हजारों दांत निकलते हैं।

सिसिलिड- यह मछली अफ्रीकी झीलों के पास मीठे पानी में रहती है और जो मिल जाए उसे चट कर जाती है। उसे मछलियों के पंख, अंडे, भ्रूण और लार्वासे कोई ऐतराज नहीं है। सिसिलिड की अलग-अलग प्रजातियों ने शिकार के अलग-अलग तरीके विकसित कर लिए हैं। जैसे- स्केलपर और फिन ब्राइटर प्रजातियां अपने शिकार का रंग ही धारण कर लेती हैं। इस तरह ये बिना कोई शक पैदा किए अपने शिकार के समूह में आसानी से घुस जाती है और शिकार करती है। सबसे अनोखी सीक्लिड होती है । यह शांत स्थिर रहती है और मरने का ढोंग करती है। इसका रंग तब तक बदलता रहता है जब तक कि यह एक मृत शरीर के समान नजर नहीं आने लगती। बचे-खुचे टुकड़े खाने वाली मछली इसकी तरफ आकर्षित होकर इसे खाने आती है, लेकिन वह खुद शिकार हो जाती है। अपसाइड डाउन कैटफिश पीठ के बल तैरने और अपना पेट ऊपर की तरफ रखने की आदत के कारण यह कैटफिश प्रजाति की मछलियों में कुछ अलग ही नजर आती है। अपनी इस आदत के कारण इसका नाम अपसाइड -डाउन कैटफिश पड़ा है।

ज्यादातर मछलियों की तरह इसका पेट रूपहला नहीं होता, बल्कि उसकी पीठ के रंग से कुछ गहरा होता है। इस तरह यह किसी का शिकार होने से बच जाती है।

क्रोकर- यह मछली ऐसी आवाजें निकालती है, जैसे कोई ढोल बज रहा हो। इसलिए इसे ढोल बजाने वाली मछली भी कतहे हैं। क्रोकर मछली अपने पेट में स्थित दो छोटी मांसपेशियों की मदद से ढोल जैसी आवाज पैदा करती है। ये मांसपेशियां पेट मे ही स्थित एक छोटी सी हवा भरी थैली स्विम ब्लैंडर से कंपन से साथ टकराती है। ये मांसपेशियां एक सेकंड में 24 बार कंपन्न करती हैं। ज्यादातर मछलियों में स्विम ब्लैंडर एक कोमल थैली जैसी रचना होती है।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि स्विम ब्लेंडर की यही अनोखी संरचना क्रोकर की आवाज के लिए जिम्मेदार होती है। सामान्य क्रोकर का वजन लगभग तीन किलोग्राम तक होता है, लेकिन कई ऐसे भी क्रोकर मिले हैं जिनका वजन सौ किलोग्राम से ज्यादाथा। भारत के बहुत से इलाकों में क्रोकर व्यावसायिक मछली है। मांस एवं स्विमब्लेंडर के लिए इसका शिकार किया जाता है। स्विम ब्लेंडर से सस्ता आइसिंग्लास (एक प्रकार का जिलेटीन) बनाया जाता है।

आलू में लिखी मिली कुरान की आयत

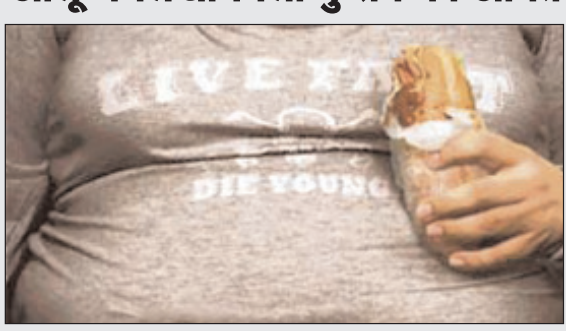

कभी-कभी प्रकृति भी अपने अलौकिक चमत्कारों से हमें चकित करती है। बिजनौर जिले के नजीराबाद के पाईबाग में रहने वाले नफीस अहमद की पत्नी ने एक बड़ा आलू काटा तो उसे अरबी में कुछ लिखा मिला, जिसे स्थानीय मौलवी से पढ़वाया गया तो वह कुरान की एक पवित्र आयत निकली।

कचरे से सजाई सुंदर होटल

हम कचरे को अपने घर से निकालकर अनावश्यक समझकर अपने घरों से दूर कर देते हैं, लेकिन यह एक आश्चर्यचकित कर देने वाली खबर है कि फ्रांस के शहर मेड्रिड के निकट स्थित प्लाज वे वलाओ नामक होटल के मालिक ने अपनी होटल की साज-सज्जा समुद्री कचरा (गारवेज) के उपयोग से कर प्रसिद्धि पायी है।

इस होटल की सजावट प्रसिद्ध कलाकार सी हाल्ट ने की। उन्होंने होटल को सुंदर बनाने में सौंदर्य सामग्री में बहुत से वेस्ट मटेरियल का उपयोग किया है। संसार में अपने किस्म की यह अनूठी होटल है।

कुत्तों के लिए शानदार रेस्त्रां

आज के युग में मनुष्य ने इतनी तरक्की कर ली है कि वफादार कुत्तों के लिए भी सर्वसुविधा संपन्न होटल बना डाला है। जी हां, ब्राजील के रियो डि जेनिरियो के कोयकवाना नामक स्थान में पेटडेलरिया नामक एक शानदार रेस्त्रां खोला गया है। यहां कुत्तों के लिए सर्वसुविधायुक्त आवास, मनोरंजन, पौष्टिक भोजन आदि की भी व्यवस्था है। इस रेस्त्रां की मालकिन रोबार्ट कमारा अपने इस प्रोजेक्ट से काफी धन और यश कमा रही हैं।

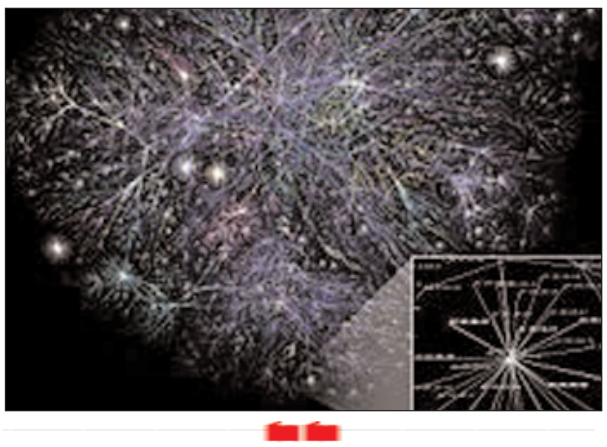

डीप वेब क्या है इस इंटरनेट की काली दुनिया में

इंटरनेट का एक स्वरूप हम देखते हैं जिसमें गूगल, याहू, फेसबुक, ट्विटर और अन्य अनगिनत वेबसाइटें होती हैं जिसे हर कोई खोल सकता है, लेकिन इंटरनेट में एक दुनिया और बसी है, जिसे डीप वेब कहते हैं।

डीप वेब यानी इंटरनेट की इस काली दुनिया में कई गैरकानूनी बाजार सजते हैं। कई ऐसी मादक, खतरनाक चीजें खरीदी बेची जाती हैं, जिन्हें बेचना या खरीदना जुर्म माना जाता है।

पैसे की बजाय वर्चुअल मनी, बिटकॉइन से पेमेंट होता है।

ऐसी ही एक ऑनलाइन बाजार सिल्क रोड को पिछले साल अमरीका की एफबीआई ने बंद करवाया था।

इन वेबसाइटों से खरीददारी करने पर पहचान छुपी रह जाती है, इसलिए आपराधिक गतिविधियों में इनका इस्तेमाल ज्यादा होता रहा है।

डीप वेब कितना गहरा
क्या है टॉर -

- टीओआर यानी द ऑनियन रूटर इंटरनेट का ही एक हिस्सा है, जहां पर आम ब्राउजर से नहीं पहुंचा जा सकता। इसके लिए फायरफॉक्स ब्राउजर के एक खास किस्म की जरूरत होती है।

इसे अमरीकी नेवी रिसर्च लैब ने बनाया था ताकि इंटरनेट पर बिना ट्रैक हुए अनॉनिमस ब्राउज किया जा सके।

यह दो तरह से काम करताहै। एक तो यह कि किसी साइट को खोलने पर जो डिजिटवल चिन्ह पीछे छूटते हैं, ये उन्हें समझ पाना इतना कठिन बना देता है। ब्राउजिंग लगभग अनॉनिमस हो जाती है।

दूसरा यह कि टॉर में कई साइट डॉट कॉम ऑनियन एक्सटेंशन में खुलता है। ये साइट छुपी होती हैं और सिर्फ टॉर पर ही दिखती हैं। गूगल और बिंग जैसे सर्च इंजन पर भी ये लिस्ट नहीं होतीं। इसका प्रयोग पॉर्नोग्राफी या आपराधिक गतिविधियों के लिए ही नहीं बल्कि गोपनीय जानकारी भेजने के लिए भी किया जाता है।

एंटीवायरस बनाने वाली कंपनी मैकअफे की सार्क देशों की इकाई के प्रबंध निदेशक जगदीश महापात्रा ने बताया कि डीप या डार्क वेब हमें सार्वजनिक तौर पर दिखने वाले इंटरनेट से तीन गुना बड़ा हो सकता है।

उन्होंने कहा, टॉर के जरिए डार्क वेब तक लोग पहुंचते हैं। इसे रक्षा सेवाओं के लिए प्रयोग किया जाता था, लेकिन जैसा ज्यादातर तकनीकों के साथ होता है, इसे वे लोग भी इस्तेमाल करने लगे जिन्हें यहां नहीं होना चाहिए था। साइबर अपराधी तमाम गैर कानूनी गतिविधियों के लिए इसका इस्तेमाल करने लगे हैं।

सरकारी या गैरसरकारी जासूसी, ड्रग्स बेचने से लेकर पॉर्न का कारोबार और मानव तस्करी तक, सब कुछ इंटरनेट की इस काली दुनिया में खुलेआम होता है।

काफी समय तक इंटरनेट पर एफबीआई और डीप वेब संचालकों के बीच चोर-पुलिस के खेल के बाद बीते साल बंद किए गए सिल्क रोड ने इस दुनिया की जो तस्वीर पेश की, वह कई विशेषज्ञों की सोच से ज्यादा खतरनाक थी।

अपराधियों का आश्रय : आमतौर पर सार्वजनिक इंटरनेट पर गैरकानूनी काम करने वालों तक सुरक्षा एजेंसियां आसानी से पहुंच जाती हैं, लेकिन डीप वेब में साइबर अपराधी बड़े आराम से गैर कानूनी गतिविधियां करते हैं, क्योंकि उनके पकड़े जाने का खतरा वहां कम होता है। करीब दस साल पहले शुरू की गई यह सेवा अब अपराधियों के लिए सुरक्षित आश्रय बन गई है।

तकनीकी जगत के कई लोग इसे साइबर जगत का अंडरवर्ल्ड भी कहने लगे हैं। जगदीश महापात्रा कहते हैं, तकनीक कभी गलत नहीं होती है। यह इस पर निर्भर करता है कि आप इसका उपयोग कैसे करते हैं। अगर इसे सुरक्षित बनाकर कानूनी रूप से इसका उपयोग किया जाता, तो यह एक उपयोगी सेवा साबित होती।

लेकिन इस आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता कि बैंकिंग और सुरक्षा से लेकर कई अहम जानकारियों से लैस इंटरेट के लिए डीप वेब एक बड़ा खतरा बनकर उभरा है।

नए खोज से जानिए
कैसे गंदे पानी को चंद सेकेंड में शुध्द कर सकते हैं

वैज्ञानिकों ने दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाला एक ऐसा नया पॉलीमर तैयार किया है, जो कि चंद सेकेंड में ही बहते जल में से प्रदूषकों को खत्म कर सकता है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे घर में इस्तेमाल किए जाने वाले एयर फ्रेशनर हवा में दिखाई न पड़ने वाले प्रदूषकों को पकड़ता है और अवांछित गंध को मिटा देता है।

शोधकर्ताओं ने जलशोधन उद्योग में क्रांति ला सकने वाली तकनीक के विकास के लिए साइक्लोडेक्सट्रिन नामक पदार्थ का इस्तेमाल किया है। यह वही पदार्थ है, जो कि एयर फ्रेशनर में इस्तेमाल किया जाता है।

अमेरिका की कोर्नेल यूनिवर्सिटी के असोसिएट प्रोफेसर विल डिचेल के नेतृत्व वाले दल ने साइक्लोडेक्सट्रिन का संरंध्र रूप तैयार किया। साइक्लोडेक्सट्रिन के इस रूप ने पारंपरिक तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले सक्रिय कार्बन की तुलना में प्रदूषकों के अवशोषण की क्षमता कुछ मामलों में 200 गुना से भी ज्यादा दिखी।

साइक्लोडेक्सटेरिन से बने पुराने पॉलिमरों की तुलना में सक्रिय कार्बनों का सतही क्षेत्रफल तो ज्यादा होता है लेकिन जितनी मजबूती से साइक्लोडेक्सटेरिन प्रदूषकों को बांधकर रख पाता है, उतनी मजबूती सक्रिय कार्बन नहीं दिखा पाते।

डिचेल ने कहा, 'सबसे पहले तो हमने साइक्लोडेक्सटेरिन से बने ज्यादा सतही क्षेत्रफल वाले पदार्थ का निर्माण किया। हमने कुछ लाभ सक्रिय कार्बन के शामिल किए और कुछ निहित लाभ साइक्लोडेक्सटरिन के थे।' उन्होंने कहा, 'ये पदार्थ बहते पानी से कुछ ही सेकेंड में प्रदूषकों को मिटा देंगे।' साइक्लोडेक्सटेरिन वाले पॉलीमर का पुनरूत्पादन आसानी से और सस्ते तरीके से किया जा सकता है। इसका कई बार पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है और इसके प्रदर्शन में कोई कमी भी नहीं आती।